

नाटना अ.क्रि. (तद्.) पीछे हटना या मुकरना।

नाटवसंत पुं. (तत्.) संगीत में एक प्रकार का संकर राग।

नाटा वि. (तद्.) 1. जिसका कद या डील साधारण से कम हो, छोटे कद वाला, कम ऊँचा या कम लंबा पु. कम ऊँचा या छोटे डील का बैल।

नाटाकरंज पुं. (तद्.+तत्.) करंज नामक वनस्पति का एक प्रकार। इसका कांटेदार वृक्ष भी होता है तथा यह फल भी होता है।

नाटाभ पुं. (तत्.) तरबूज।

नाटार पुं. (तत्.) अभिनेत्री का पुत्र।

नाटिका स्त्री. (तत्.) दृश्य काव्य का एक विशेष रूप जिसमें मूलतः कल्पित कथा का सहारा लिया जाता है, इसका नायक प्रायः उदात्त चरित्र वाला होता है तथा इसमें नृत्य-गीत आदि की बहुलता है।

नाटित (तत्.) वह नाटक जिसका अभिनय हो चुका हो, अभिनीत पु. अभिनय।

नाट्य पुं. (तत्.) 1. नट का कार्य-व्यापार 2. रंगमंच पर नाचने, गाने, बजाने और अभिनय करने का कार्य 3. गद्य की एक विशिष्ट विधा जिसमें अभिनय के द्वारा रंगमंच पर भावों और कथा का प्रदर्शन किया जाता है, इसका लेखन रंगमंच पर प्रदर्शन के लिए ही प्रायः किया जाता है 4. स्वांग करने की क्रिया या भाव 5. नृत्यकला 6. अभिनेता की वेशभूषण टि. यह एक प्राचीन विधा है जिस पर सबसे पहले 'नाट्यशास्त्र' नामक रचना आचार्य भरतमुनि ने लिखी थी, किंतु यहाँ 'नाट्य' का अर्थ साहित्य से है तथा बाद में 'नाट्य' एक गद्य विधा के रूप में विकसित होने लगी 4. ऐसा नक्षत्र जिसमें नाट्य या नाटक का आरंभ शुभ माना जाता है।

नाट्यकार पुं. (तत्.) 1. नाट्य नामक साहित्यिक विधा का लेखन करने वाला 2. नाटक में अभिनय या स्वांग करने वाला 3. नाटक करने वाला नट।

नाट्यधर्मिका स्त्री. (तत्.) अभिनय संबंधी निर्देश या संकेतों की जानकारी देने वाली पुस्तिका।

नाट्यप्रिय पुं. (तत्.) 1. महादेव, शिव 2. जिसे नाट्य विधा पसंद हो या नाट्य विधा का निरंतर मन से अध्ययन करने वाला।

नाट्यमंदिर पुं. (तत्.) नाट्य का प्रदर्शन करने वाला स्थान, नाट्यशाला।

नाट्यरासक पुं. (तत्.) काव्य. में वर्णित एक प्रकार का उपरूपक, दृश्य काव्य, इसमें प्रायः एक ही अंक होता है, इसका नायक प्रायः उदात्त और नायिका वासक-सज्जा होती है। इसमें गीत एवं नृत्य का प्रधान रूप से आश्रय लिया जाता है।

नाट्यशाला स्त्री. (तत्.) नाटक के प्रदर्शन हेतु निर्मित किया गया एक विशिष्ट आकार-प्रकार का भवन जिसमें एक ओर अभिनेताओं द्वारा नाटक का मंचन किया जाता है तो दूसरी ओर दर्शकों के बैठने का स्थान बनाया जाता है, इसका निर्माण कई ढंग से किया जाता है, रंगशाला। theatre

नाट्यशास्त्र पुं. (तत्.) 1. वह शास्त्र या सिद्धांत जिसमें नाट्य विधा के स्वरूप तथा नाचने-गाने-अभिनय आदि की कलाओं का विवेचन विश्लेषण किया जाता है 2. आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित एक ग्रंथ का नाम जिसमें साहित्य से संबंधित सिद्धांतों की जानकारी दी गई है।

नाट्यागार पुं. (तत्.) दे. नाट्यशाला।

नाट्याचार्य पु. (तत्.) 1. 'नाट्य' विधा का शिक्षक या विद्वान 2. 'नाट्यशास्त्र' की रचना करने वाला, आचार्य भरतमुनि।

नाट्यालंकार पुं. (तत्.) काव्य. अभिनय का सौंदर्य बढ़ाने वाली ऐसी विशेष बातें जिन्हें काव्यशास्त्रकारों ने उनके अलंकार रूप में माना है टि. साहित्यदर्पण में नाट्यालंकार 33 कहे गए हैं- आशीर्वाद, अक्रंद, कपट, अक्षमा, गर्व, उद्यम, आश्रय, उत्प्रासन, स्पृहा, क्षोभ, पश्चात्ताप, उपपत्ति, आशंसा, अध्यवसाय, विसर्प, उल्लेख, उत्तेजन, परिवाद,